हर कि रा जावेद बायद जन्नतुल मावा बहिश्त
हर ज़माँ बा सिद्क़ ख़्वानद शजर-ए-पीराने चिश्त

# शजर-ए-तैय्यिबह

सिलसिल-ए-आलिया, चिश्तिया, निज़ामिया, मीनाइया, सफ़विया


पीरे तरीक़त हुज़ूर दाई-ए-इस्लाम आरिफ़े बिल्लाह

## शैख़ अबू सईद शाह एह्सानुल्लाह

मोह़म्मदी सफ़वी,दामत बर्कातुहुमुल आलिया



ख़ानक़ाहे आलिया अरिफ़िया, सैयद सरावाँ शरीफ़

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मा-निर्रह़ीम

# शजर-ए-तय्यिबह

**सिलसिल-ए-आलिया, चिश्तिया, निज़ामिया, मीनाइया, सफ़विया**

**पीरे तरीक़त हुज़ूर दाई-ए-इस्लाम आरिफ़े बिल्लाह**

## शैख़ अबू सईद शाह एह़्सानुल्लाह मोह़म्मदी सफ़वी

**दामत बर्कातुहुमुल आलिया**

## ज़ेबे सज्जादा

## ख़ानक़ाहे आलिया अरिफ़िया, सैयद सरावाँ शरीफ़

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

**बिस्मिल्लाहिर्रह़मा-निर्रह़ीम**

**सिलसिल-ए-आलिया, चिश्तिया, निज़ामिया, मीनाइया, सफ़विया**

हर कि रा जावेद बायद जन्नतुल मावा बहिश्त
हर ज़माँ बा सिद्क़ ख़्वानद शजर-ए-पीराने चिश्त

**अर्थ:** जिस किसी को हमेशा के लिए जन्नत का एक उच्च स्थान चाहिए, उसे हर वक़्त सच्चे दिल से पीराने चिश्त का शजरा पढ़ना चाहिए।

بِحَقِّ مَنۡ قَالَ
كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصۡلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرۡعُهَا فِي السَّمَآءِ

बेहक्क़े मन क़ाला

**क-शजरतिन तय्येबतिन असलुहा साबितुन व फ़रउहा फ़िस्समा**

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शैख़ अबू सईद शाह एह़्सानुल्लाह मोहम्मदी सफवी (बितूले ह़यातिही) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शैख़ अबू सईद शाह एह़्सानुल्लाह मोह़म्मदी सफ़वी (बितूले ह़यातिही)[1] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत मख़दूम शाह अह़मद सफ़ी ख़ादिम मोह़म्मद सफ़वी मोह़म्मदी उर्फ़ शाह रियाज़ अह़मद क़द्दसल्लाहु सिर्रहू [2] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत मख़दूम शाह सफ़ीउल्लाह मोह़म्मदी सफ़वी उर्फ़ शाह नियाज़ अह़मद क़द्दसल्लाहु सिर्रहू([3]) |

---

(1) ज़ेबे सज्जादा आस्तान-ए-आलिया आरिफ़िया, सैयद सरावाँ शरीफ़, इलाहाबाद

(2) वफ़ात- 15 मोहर्रम 1400 हिजरी, मज़ार सैयद सरावाँ शरीफ़ इलाहाबाद

(3) 28 शाबान 1374 हिजरी, मज़ार सैयद सरावाँ शरीफ़ इलाहाबाद

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत सुल्तानुल आरिफ़ीन क़ुदवतुस्सालिकीन बन्दगी मख़दूम ख़्वाजा शहंशाह आरिफ़ सफ़ी मोह़म्मदी सफ़वी मह़बूबे इलाही लाहूती गेसू दराज़ क़द्दसल्लाहु सिर्रहू(4) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत क़ुदवतुल आरिफ़ीन ज़ुबदतुस्सालिकीन बन्दगी मख़दूम साहिबे सिर्रे क़ुल-हु-अल्लाह शाह अब्दुल ग़फूर मोह़म्मदी सफ़वी चर्म-पोश मह़बूबे यज़दानी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (5) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत मख़दूम शाह मोह़म्मद ख़ादिम सफ़ी मोह़म्मदी सफ़वी मह़बूबे रह़मानी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (6) |

---

(4) 18 ज़ीकादा 1320 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सैयद सरावाँ शरीफ़ इलाहाबाद

(5) 22 जमादिल ऊला 1324 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस बाराबंकी शरीफ़ मोहल्ला रसूलपुर

(6) 13 रजब 1287 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सफ़ीपुर शरीफ़ उन्नाव

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह मोह़म्मद हफ़ीज़ुल्लाह क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[7] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह मोह़म्मदी उर्फ़ ग़ुलाम पीर क़द्दसल्लाहु सिर्रहू [8] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह इफ़हामुल्लाह क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[9] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह अब्दुल्लाह क़द्दसल्लाहु सिर्रहू [10] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह भूलन क़द्दसल्लाहु सिर्रहू [11] |

---

(7) 20 जमादिल उखरा 1281 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सफ़ीपुर शरीफ़

(8) 15 जमादिल ऊला 1251 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, साण्डी, हरदोई

(9) 21 रबीउल अव्वल 1196 हिजरी, मज़ार, सफ़ीपुर शरीफ़

(10) 6 रबीउल अव्वल 1163 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सफ़ीपुर शरीफ़

(11)1 रजब 1104 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सफ़ीपुर शरीफ़

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह ज़ाहिद क़द्दसल्लाहु सिर्रहू [12] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह अब्दुल वाह़िद क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[13] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह अब्दुर्रहमान क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[14] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह बन्दगी अकरम क़द्दसल्लाहु सिर्रहू [15] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शाह बन्दगी मुबारक क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[16] |

---

(12) 3 रमज़ान 1095 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सफ़ीपुर शरीफ़
(13) 3 रबीउल अव्वल 1075 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सफ़ीपुर शरीफ़
(14) 11 शव्वाल 1047 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सफ़ीपुर शरीफ़
(15) 3 रबीउल आखिर 1026 हिजरी, मज़ार, सफ़ीपुर शरीफ़
(16) 24 रजब 956 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सफ़ीपुर शरीफ़

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शैखुल इस्लाम अब्दुस्समद उर्फ़ मख़दूम शाह सफ़ी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[17] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत मख़दूम शैख़ सादुद्दीन ख़ैराबादी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[18] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत शैख़ मोह़म्मद उर्फ़ मख़दूम शाह मीना क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[19] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत मख़दूम शैख़ सारंग क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[20] |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत मख़दूम सैयद अबुल-फज़्ल उर्फ़ राजू क़त्ताल क़द्दसल्लाहु सिर्रहू[21] |

---

(17) 19 मोहर्रम 945 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस सफ़ीपुर शरीफ़

(18) 16 रबीउल अव्वल 922 हिजरी, मज़ार, ख़ैराबाद शरीफ, सीतापुर

(19) 23 सफर, 884 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, लखनऊ

(20) 17 शव्वाल 855 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस मझगवाँ शरीफ़

(21) 16 जमादिल आखिर 827 हिजरी, मज़ार, उच, क़रीब मुल्तान

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत मख़दूम जहानियां जहाँगश्त जलालुलहक़ बुख़ारी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (22) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा नसीरुद्दीन चिराग़ देहली क़द्दसल्लाहु सिर्रहू(23) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत सुल्तानुल मशाइख़ ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया मह़बूबे इलाही क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (24) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा शैख़ फ़रीदुद्दीन मसऊद गंजे शकर क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (25) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख्तियार काकी ऊशी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू(26) |

---

(22) 10 ज़िल्हिज्जा 785 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस उच शरीफ़
(23) 18 रमज़ान 757 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस दिल्ली
(24) 18 रबीउस्सानी 725 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस दिल्ली
(25) 5 मोहर्रम 664 हिजरी,मज़ार पाक-पटन, पाकिस्तान
(26) 14 रबीउल अव्वल 633 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस दिल्ली

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाज-ए-ख़्वाजगाँ ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती हसन सजज़ी मह़बूबे रब्बानी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (27) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (28) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़न्दनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (29) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन मौदूद बिन अबू यूसुफ चिश्ती क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (30) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ चिश्ती क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (31) |

---

(27) 6 रजब 632 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, अजमेर शरीफ़
(28) 5 शव्वाल 603 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, मक्का शरीफ़
(29) 10 रजब 584 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, ज़न्दना पर्गना बुखारा
(30) 1 रजब 527 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, चिश्त शरीफ़
(31) 3 रजब 459 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, चिश्त शरीफ़

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख्वाजा नासिहुद्दीन अबू मोह़म्मद बिन अबू अह़मद चिश्ती क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (32) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा क़ुदवतुद्दीन अबू अह़मद अब्दाल चिश्ती क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (33) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा अबू इस्हाक़ शामी चिश्ती क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (34) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा उलवे दीनवरी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (35) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा हुबैरा बसरी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (36) |

---

(32) 4 रबीउल आखिर 411 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, चिश्त शरीफ़
(33) 1 जमादिल आखिर 355 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, चिश्त शरीफ़
(34) 14 रबीउल आखिर 329 हिजरी, मज़ार मुक़द्दस, अक्का, शाम
(35) 14 मोहर्रम 299 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस अक्का, शाम
(36) 7 शव्वाल 287 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस, बसरा, इराक़

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा सदीदुद्दीन हुज़ैफ़ा मरअ़शी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (37) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा इब्राहीम बिन अद्हम बल्ख़ी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (38) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (39) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (40) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा ह़सन बसरी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू (41) |

---

(37) 4 शव्वाल 207 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस बसरा इराक़

(38) 26 जमादिल ऊला 166 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस शाम, क़रीब मज़ारे हज़रत लूत अलैहिस्सलाम

(39) 3 रबीउल अव्वल 187 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस मक्का शरीफ़

(40) 27 सफर 177 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस बसरा, इराक़

(41) 1 रजब 110 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस बसरा इराक़

| |
|---|
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत ख़्वाजा अमीरुल मोमिनीन इमामुल आलमीन असदुल्लाहिल-ग़ालिब अली बिन अबी तालिब कर्रमल्लाहु वज्हहू (42) |
| इलाही बे-हुर्मते राज़ो नियाज़ ह़ज़रत सैय्यदुल मुर्सलीन ख़ातमुन्नबीयीन सुल्तानुल अंबिया अह़मदे मुज्तबा मोह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ (43) |

अल्लाहुम्मा सब्बित क़दमी अलस्सिरातिल मुस्तक़ीम

मुरीद शुद.....दर ह़ल्क़-ए-पीराने चिश्त

दर आमद, इलाही अंजाम व आक़िबत बख़ैर बाद

आमीन सुम्मा आमीन या रब्बल आलमीन!

---

(42) 21 रमज़ान 40 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस नजफ़ अशरफ़, इराक़

(43) 12 रबीउल अव्वल 11 हिजरी, मज़ारे मुक़द्दस मदीना शरीफ़

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمُ

**बिस्मिल्लाहिर्रह़मा-निर्रह़ीम**

**सिलसिल-ए-आलिया, चिश्तिया, निज़ामिया, मीनाइया, सफ़विया**

हर कि रा जावेद बायद जन्नतुल मावा बहिश्त
हर ज़माँ बा सिद्क़ ख़्वानद शजर-ए-पीराने चिश्त

**अर्थ:** जिस किसी को हमेशा के लिए जन्नत का एक उच्च स्थान चाहिए, उसे हर वक़्त सच्चे दिल से पीराने चिश्त का शजरा पढ़ना चाहिए।

بِحَقِّ مَنۡ قَالَ
كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصۡلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرۡعُهَا فِي السَّمَآءِ

बेहक्क़े मन क़ाला

**क-शजरतिन तय्येबतिन असलुहा साबितुन व फ़रउहा फ़िस्समा**

या इलाहल आलमीं कर साहिबे सिद्क़ो सफ़ा
अज़ तुफ़ैले अंबिया व औलिया व अस्फ़िया

कल्म-ए-ला तक़नतू मिर्रहमतिल्लाह(44) के तुफ़ैल
रहम कर गो मासियत(45) में ग़र्क़ हूँ सर ता ब-पा

बस रहूँ मैं जादा पैमाए सिराते मुस्तक़ीम(46)
अज़ पए एहसानुल्लाह शाह दर्वेशे ख़ुदा

हर बुने तन(47) से हो जारी अश्हदु अन-ला इलाह
अज़ पए मख़्दूम शैख़ अह़मद सफ़ी-ए-बासफ़ा

जिस तरफ देखूँ नज़र आए जमाले किब्रिया
अज़ तुफ़ैले शह सफ़ीउल्लाह वली-ए-हक़ नुमा

---

(44) तुम अल्लाह की रहमत से मायूस मत हो (सूरह ज़ुमर, 53)
(45) गुनाह
(46) सीधे रास्ते पर चलने वाला
(47) रोंगटा

अज़ तुफ़ैले बन्दगी मख़्दूम शाह आरिफ़ सफ़ी
या इलाही नूर से मामूर[48] कर सीना मेरा

वाक़िफे सिर्र क़ुल-हु-अल्लाह हज़रते अब्दुल ग़फूर
या इलाही नफ्स व शैताँ की ज़लालत[49] से बचा

एक दम भी तेरे ज़िक्रो फ़िक्र से ग़ाफ़िल न हूँ
अज़ पए ख़ादिम सफ़ी मक़बूले दर्गाहे ख़ुदा

बन्दगी मक़बूल हो बहरे ह़फीज़ुल्लाह शाह
गरचे रस्मे बन्दगी से हूँ बहुत ना आशना

या इलाही शह ग़ुलामे पीर सूफ़ी के तुफ़ैल
ख़ादिमुल फुक़रा बना या ख़ाके पाए औलिया[50]

अज़ पए इफ़हामुल्लाह शाह व अब्दुल्लाह शाह
बहरे भूलन भूल जाऊँ सब बजुज़ ज़ाते ख़ुदा

---

(48) भरा हुआ
(49) गुमराही
(50) औलिया के पाँव की धूल

दौलते फक्रो तवक्कुल दे के मौला कर ग़नी
अज़ तुफ़ैले हज़रते ज़ाहिद फक़ीरे बे रिया

ख़्वाबे ग़फलत[51] से हर एक रग को मेरी बेदार कर
अज़ तुफ़ैले ख़्वाजा अब्दुल वाहिदे हक़ आशना

अज़ पए शाह अब्दुर्रहमाँ ख़ुद से बेख़ुद कर मुझे
अज़ तुफ़ैले बन्दगी अकरम पिला जामे फ़ना

मूतू क़ब्ला अन तमूतू[52]की हक़ीक़त खोल दे
अज़ तुफ़ैले बन्दगी-ए-शह मुबारक पारसा

मारिफत के जाम से सरशार कर सर ता क़दम
अज़ तुफ़ैले शह सफ़ीओ सादो मीना पारसा

---

(51) ग़फ़लत की नींद

(52) खुद को मुर्दा करदो इससे पहले कि तुम्हें मौत आए

दीद-ए-गिरयाँ,[53] दिले बिरियाँ[(54)] अता कर बे-दरेग़[(55)]
अज़ तुफ़ैले हज़रते मख़्दूम सारंग औलिया
महरमे असरार[(56)] कर बहरे शहे राजू क़त्ताल
अज़ पए ख़्वाजा जलालुलहक़ बुख़ारी बादशा
अज़ पए ख़्वाजा नसीरुद्दीन कर रौशन ज़मीर
अज़ पए ख़्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे ख़ुदा
अज़ पए बाबा फ़रीदुद्दीन कर साहिब यक़ीं
अज़ तुफ़ैले ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन क़ुतुबुल औलिया
साफ़ कर आइन-ए-दिल मा सिवा की गर्द से
अज़ पए ख़्वाजा मोईनुद्दीन जाने औलिया

---

(53) रोने वाली आँख

(54) तड़पने वाला दिल

(55) बग़ैर अफसोस

(56) भेदों का जानने वाला

बाद-ए-तौहीद से सरशार कर सर ता क़दम
अज़ पए उस्मान हारूँ मख़्ज़ने जूदो सख़ा[57]

चश्मे हक़ बीं[58] कर अता बहरे शरीफ़े ज़न्दनी
अज़ तुफ़ैले ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन मौदूदे ख़ुदा

अज़ पए ख़्वाजा अबू यूसुफ रहूँ हर लहज़ा गुम
अज़ तुफ़ैले बू मोहम्मद नासिहुद्दीं बा-ख़ुदा

शह अबू अहमद वली अब्दाल चिश्ती के तुफ़ैल
या इलाही मह-वो मुस्तग़रक़[59] रहूँ सर ता ब-पा

बहरे बू इस्हाक़ शामी आरिफ़े कामिल बना
अज़ तुफ़ैले उलवे दीनवरी हक़ीक़त आशना

शह हुबैरा और सदीदुद्दीन हुज़ैफ़ा के तुफ़ैल
या इलाही दौलते क़ुर्बे नवाफ़िल कर अता

---

(57) बख़्शिश और अता का ख़ज़ाना
(58) हक़ देखने वाली आँख
(59) आशिक, काम में पूरी ताक़त से लग जाना वाला

हुब्बे दुनिया की तमन्ना से मुझे महरूम रख
बहरे इब्राहीम अद्हम सर-गिरोहे औलिया

अज़ तुफ़ैले हज़रते ख़्वाजा फुज़ैल इब्ने अयाज़
आलमे वहमो गुमाँ से बे नियाज़ी कर अता

बहरे अब्दुल वाहिद इब्ने ज़ैद कर मस्ते अलस्त
अज़ पए ख़्वाजा हसन बसरी सिराजुल अस्फिया

बस सक़ाहुम रब्बुहुम[60] कह कर पिला जामे तहूर[61]
अज़ तुफ़ैले साक़ी-ए-कौसर अली-ए-मुर्तज़ा

बे ख़ुदो सरमस्त कर यानी फ़ना फ़िज़्ज़ात कर
अज़ तुफ़ैले रहमते आलम मोहम्मद मुस्तफ़ा

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

**अल्लाहुम्मा सब्बित क़दमी अलस्सिरातिल मुस्तक़ीम आमीन सुम्मा आमीन या रब्बल आलमीन**

---

(60) उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलाएगा (सूरह इंसान, 21)
(61) पाकीज़ा शराब

# ज़रूरी तालीमात

ख़ूब याद रखें कि आपने इस फ़क़ीर के हाथ पर अपने सारे छोटे-बड़े, जाने-अंजाने में किए गुनाहों से तौबा की है। वादा करें कि अब किसी तरह के गुनाह के क़रीब न जाएँगे, फ़िर इन्शा अल्लाह पीराने तरीक़त की हिम्मत और मदद शामिले हाल होकर तमाम गुनाहों से महफ़ूज़ रखेगी। आमीन

तौबा वही मक़बूल है जिसमें अपने गुनाहों पर शर्मिंदगी और बाद में उनसे बचने का पक्का इरादा हो। आपने बैअत करके अल्लाह तआला से अहद (वादा) किया है, अब आपके लिए ज़रूरी है कि इस वादे पर क़ायम रहें, अगर आपने ऐसा नहीं किया तो आप वादा तोड़ने वाले होंगे और

उसका ख़मियाज़ा (नुक़सान) भी आप ही को भुगतना पड़ेगा, तो ज़रूरी है कि हर काम करने से पहले सोच लें कि यह काम इस वादे (बैअत) के ख़िलाफ तो नहीं है।

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन बातों का हुक्म फरमाया है उनको करें और जिन कामों से मना किया है उनसे दूर रहें ख़ासकर फराइज़ और वाजिबात की पाबंदी करते रहें। जब तक होश व हवास बाक़ी रहे नमाज़-रोज़ा अदा करने में सुस्ती न करें वरना कहीं के नहीं रहेंगे।

अपने वक़्त को फुज़ूल बातों में बर्बाद न करें। अच्छी आदतें जैसे- सब्र व रज़ा, सच्चाई व ख़ुलूस, इंसाफ, एहसान, क़नाअत, क़ुर्बानी, आजिज़ी व इंकसारी वगैरह एख्तियार करें।

बुरी आदतें जैसे- झूठ, फ़रेब, हसद, घमण्ड, ज़ुल्म, इंतेक़ाम, नफ़रत, ख़यानत, बेईमानी, बुरे अख़्लाक़, ग़ुस्सा, ग़ीबत, चुग़ुलखोरी, ख़ुद पसंदी, दिखावा, कंजूसी,

लालच वग़ैरह से दूर रहें और चोरी, जुवा, शराब, सूद, ज़िना, लिवातत, झूठी क़सम, रिश्ता तोड़ना, लड़ाई, झगड़ा, झूठी गवाही, क़त्ल व डकैती, माँ-बाप की नाफ़रमानी, औरतों पर ज़ुल्म व ज़्यादती, तअस्सुब (शिद्दत) और उलमा व मशाइख़ की तौहीन से बचते रहें। किसी से बदला न चाहें। अपने नफ़्स के लिए किसी को न तो बुरा कहें और न उसका बुरा चाहें। इस बात की पूरी कोशिश करें कि किसी पर ज़्यादती न हो, नरमी का बर्ताव रखें, तक्लीफ देने वाले को भी राहत पहुँचाएँ, बुरा चाहने वालों का भी भला चाहें, किसी की ग़ीबत न करें, नफ्सानियत को हावी न होने दें, बन्दों के हक़ का खास ख्याल रखें, ग़रीबों, मिस्कीनों, कमज़ोरों, बीमारों, यतीमों, बेवाओं वग़ैरह पर ज़्यादा से ज़्यादा रहम करें। हर शख़्स से ख़ुशदिली से मिलें। किसी का दिल न दुखाएँ, हर शख़्स की दिलजोई करें, यही तरीक़ा पीराने इज़ाम का रहा है। जो पीराने तरीक़त की राह पर चलेगा

मुमकिन नहीं कि उसका फायदा न हो।

इस राह में पीर का बहुत ही अहम मक़ाम है, जो पीर का न हुआ वह चाहे हवा में उड़े या पानी पर चले कुछ भी नहीं है। पीर की ख़िदमत से पीर की मोह़ब्बत पैदा होती है और पीर ही की मोहब्बत से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत और रसूल की मोहब्बत से अल्लाह तआला की मोहब्बत पैदा होती है। जो इंसान की पैदाइश का मक़सद है। पीर का फ़रमान अल्लाह के रसूल के फ़रमान की तरह है। जिसने पीर के फ़रमान पर अमल किया तो उसने अल्लाह के रसूल के फ़रमान पर अमल किया।

बयान है कि ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन बख्तियार काकी ने अपने एक मुरीद शैख़ अली सजज़ी को इस हालत में आवाज़ दी कि वह नमाज़ में थे। उन्होंने तुरन्त नीयत तोड़ कर कहा हाज़िर हूँ। क़ुतुब साहब ने यह देखकर कहा कि नमाज़ पढ़ ली होती तब हाज़िर होते, उन्होंने

जवाब दिया कि मख़्दूम का जवाब देना नफ़्ल नमाज़ से बढ़कर है क्योंकि सुलूक की किताबों में लिखा है कि जब पीर, मुरीद को आवाज़ दे और वह तुरन्त जवाब दे तो एक बरस की इबादत का सवाब उसके आमालनामे में लिखा जाएगा।

कहते हैं कि ख़्वाजा अबू ज़ैद मर्ग़ज़ी फ़क़ीह ख़ुरासानी क़द्दसल्लाहु सिर्रहू ह़ज को जा रहे थे, रास्ते में जब किरमान शाह पहुँचे तो हज़रत शैख़ इब्राहीम शैबान को वहाँ मौजूद पाया, चुनाँचे  उस साल हज का इरादा तर्क कर दिया और शैख़ की सोहबत और दिल की दुरुस्तगी और उसकी आबदानी को अहम जाना।

मशाइख़ का क़ौल है कि एक दिन सिद्क़ के साथ पीर की ख़िदमत बग़ैर सिद्क़ के हज़ार बरस की इबादत से बेहतर है।

ख़्वाजा उस्मान हारूनी फ़रमाते हैं कि जो शख़्स एक दिन अपने पीर की ख़िदमत करता है (जैसा कि हक़

है) और मोहब्बत से उसकी तरफ़ देखता है तो उसके बदले में अल्लाह तआला उसको जन्नत में हज़ार महल रहने को अता करेगा कि हर महल मोती का होगा और हर महल के साथ एक हूर देगा और हज़ार बरस की इबादत उसके आमालनामे में लिखेगा और क़यामत के दिन बेहिसाब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।

मुरीद पीर से उस वक़्त तक फ़ैज़ नहीं पा सकता जब तक पीर की हक़्क़ानियत को मानने वाला न हो, जितना पीर की हक़्क़ानियत का क़ायल होगा उतना जल्दी फ़ैज़ पाएगा। पीर के आदाब वही हैं जो अल्लाह व रसूल के आदाब हैं। पीर का मर्दूद कहीं भी मक़बूल नहीं हो सकता। इसलिए इससे डरते रहने की ज़रूरत है। जिस तरह भी मुमकिन हो पीर को राज़ी रखें और ख़ुद को इस तरह उसके हवाले कर दें जैसे मुर्दा ग़ुस्ल देने वाले के हाथ में होता है।

पीर की मोहब्बत और उसकी सोहबत से एक लम्हे में

वह फ़ायदे हासिल होते हैं जो बरसों की इबादत से ह़ासिल नहीं होते। पीर के सामने किसी विर्द, वज़ीफ़ा या काम में न लगें बल्कि उसी की तरफ़ मुतवज्जेह रहें। पीर से दूर रहकर भी उसी की तरफ़ मुतवज्जेह रहें, यह तवज्जोह भी सोहबत का फायदा देती है।

ہر کہ زِ دل دامنِ پیراں گرفت
گنجِ بقا زیں دہِ ویراں گرفت

(حضرت امیر خسرو)

जो कोई भी ख़ुलूसे दिल से मशाइख़ का दामन थाम लेता है उसे दुनिया के इस वीराने में भी बक़ा का खज़ाना मिल जाता है।

(हज़रत अमीर ख़ुसरो)

सुल्तानुल मशाइख
हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन ओलिया,देहली

सुल्तानुल-हिन्द
हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, अजमेर शरीफ

हज़रत मख़दूम शाह
खादिम सफी मोहम्मदी, सफीपुर शरीफ

हज़रत मख़दूम शाह सफी /
हज़रत बन्दगी शैख मुबारक, सफीपुर शरीफ

हज़रत सुल्तानुल आरिफीन
शाह आरिफ सफी मोहम्मदी, सैय्यद सरावाँ

हज़रत वाक़िफ सिर्रे कुल-हु-अल्लाह शाह
मोहम्मदी, बाराबंकी शरीफ